प्रथम अध्याय

गिरिराज किशोर : व्यक्तित्व एवं रचनासंसार

प्रथम अध्याय

गिरिराज किशोर : व्यक्तित्व एवं रचनासंसार

किसी भी साहित्य के सही-सही मूल्यांकन के लिए साहित्यकार के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का अध्ययन आवश्यक है। साहित्यकार अपने समय की परिस्थितियाँ एवं यथार्थ से प्रेरित होकर ही साहित्य का सृजन करता है। लेखक समाज से अनुभूति लेकर, उस अनुभूति को एक नयी दृष्टी देकर समाज के सामने प्रस्तुत करता है। साहित्यकार समाज से जुड़ा प्राणी है। अपनी अनुभूतियाँ, जीवनानुभूतियाँ रचना के माध्यम से प्रकट करता है। उनका साहित्य जीवन की कहानी ही है। जिस तरह से कलाकार का जीवन कला कृति में बिखरा हुआ मिलता है उसी तरह साहित्यकार का जीवन साहित्य में चित्रित होता है।

साहित्यकार का जीवन और व्यक्तित्व परिवेश से प्रभावित रहता है। उसका व्यक्तित्व उसके साहित्य में दिखाई देता है। उनके व्यक्तित्व को सजाने में समाज परिवार, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ योगदान देती हैं। अतः स्पष्ट है किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने से पहले उसके व्यक्तित्व को समझना आवश्यक है तथा समकालीन परिस्थितियों का अध्ययन करना भी आवश्यक है। गिरिराज किशोर की रचनाओं का अध्ययन करते समय उनके व्यक्तित्व को परखना जरूरी है। गिरिराज किशोर जी हिंदी के उन गिने-चुने लेखकों में से एक है, जिन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना, पत्रकारिता आदि सभी विधाओं में अपना खास रुतबा कायम किया है। लेखक का व्यक्तित्व उसके साहित्य में झलकता है और व्यक्तित्व का निर्माण उसके पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिवेश में ही होता है जिसके बीच रहकर लेखक बड़ा हुआ है।

हिंदी साहित्य में लगभग पैंतीस साल से अधिक समय तक उनका साहित्य बहुआयामी रहा है। समाज जीवन के साथ-ही-साथ बदलते मानवीय रिश्तों को चित्रित करनेवाले प्रसिद्ध कथाकार है। समकालीन कथाकारों में उनका नाम महत्त्वपूर्ण जाना-पहचाना जाता है। उनकी रचनाएँ उनके चिंतन का प्रमाण ही

है। भाव, विचार, विषय के स्तर पर उनका साहित्य अनुसंधान करना आज के युग में अनिवार्य लगता है।

1.1 व्यक्तित्व -

हर एक व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण एवं संस्कारों से प्रभावित होता है। साहित्यकार गिरिराज किशोर इसके लिए अपवाद नहीं है। साहित्यकार का जीवन उनके साहित्य में प्रतिबिंबित होता है। साहित्यकार का व्यक्तित्व जितना सशक्त होता है, उतना ही उसका साहित्य सशक्त होता है। किशोर जी प्रभावशाली साहित्यकार है। गिरिराज किशोर के व्यक्तित्व का अध्ययन उनके साहित्य को समझने के लिए अत्यंत अनिवार्य है। उनके व्यक्तित्व का निर्माण उनके जीवन संघर्षों का इतिहास है। आधुनिक साहित्य में समाज जागृति, लोककल्याण की भावना, सामाजिक प्रगति और परिवर्तन के पक्ष में लिखनेवाले लेखकों में गिरिराज किशोर महत्त्वपूर्ण साहित्यकार है।

1.1.1 जन्म -

हिंदी साहित्यकारों में प्रसिद्ध नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार गिरिराज किशोर का जन्म उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर के एक जमींदार परिवार में 8 जुलाई 1937 को हुआ। उत्तर प्रदेश का यह क्षेत्र प्राकृतिक दृष्टि से सुंदर और आकर्षक है। गिरिराज किशोर का शैशव मुजफ्फरनगर में ही बीता है। यह नगर उत्तरप्रदेश का है, जहाँ की जमीन उपजाऊ, तो लोग सधन, स्पष्टवादी, सामंती जीवन के आदती है। सामंती वातावरण, आचरण, व्यवहार, संस्कार, प्रथा परंपरा का निर्वहन आदि विशेषताएँ रही है, जिसका प्रभाव गिरिराज के परिवार पर रहा है।

1.1.2 बचपन -

गिरिराज किशोर ने बचपन के बारह साल मुजफ्फर नगर में ही बिताए। माँ की गोद एवं ममत्व और पिता का सहारा लेकर बच्चा बड़ा होता है। लेकिन ये सुख गिरिराज किशोर के नसीब में शायद नहीं था। गिरिराज किशोर जब

डेढ़ साल के थे तभी उनकी माँ का स्वर्गवास हो गया। बचपन से ही उन्हें अपनी माँ के आँचल की छाया नहीं मिल पायी। माँ का देहांत होने के कारण उन पर उनके पिता और परिवारवालों ने संस्कार किये। उनका बचपन दादाजी और घरवालों की छत्रछाया में बीता। माँ का स्वर्गवास यह उनके जीवन की सबसे बड़ी करुणाजनक घटना है। साहित्य में उनकी रुचि बचपन से थी। उन्हें बचपन में 'घुड़सवारी करना, बैडमिंटन खेलना, प्रेमचंद, वर्मा, शरतचंद्र की रचनाएँ तथा पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ना आदि शौक थे। घर में अनुशासन था। इस तरह किशोर जी का बचपन सुख-दुःख के साथ व्यतित हुआ।

1.1.3 माता-पिता -

गिरिराज किशोर की माता का नाम तारावती था। किशोर जी के जन्म के डेढ़ साल बाद उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। उन्हें अपनी माँ के प्यार से वंचित रहना पड़ा। किशोर जी अपनी माता के बारे में कहते है, "सुना है बहुत अच्छा गायन का शौक था। कपड़े सीने का शौक था। उस जमाने में घुड़सवारी करती थी, साइकिल पर चढ़ती थी। परंतु पुरानपंथी परिवार होने के कारण यह सब करने की स्वतंत्रता नहीं थी।

गिरिराज किशोर की माँ सुस्वभावी थी। अच्छे खानदान की होने के कारण संस्कार भी अच्छे थे। वह पतिव्रता थी। घर परिवार का लालन-पोषण अच्छी तरह से करती थी। त्याग, ममता, वात्सल्य, प्रेम की प्रतिमूर्ती थी। गृहकाज को अपना धर्म समझकर निभाती थी। उनकी माँ संगीत और गीत की जानकार रही है। परंतु उनका परिवार प्राचीन मान्यता, रूढ़ियों को माननेवाला था, इसी कारण उनकी कला चार दीवारों में अटकी रही। इसके संदर्भ में स्वयं लेखक ने लिखा है, कि "गाना अच्छा गाती थी। एक दकियानुस जमींदार परिवार में ब्याहें जाने के कारण उस गाने की कोई सार्थकता नहीं हुई।"[1]

1.गिरिराज किशोर - रचनाकर्म और आत्मसंबोधित प्रश्नों के घेरा वैचारिक, पृ.44

गिरिराज किशोर के पिताजी का नाम सूरजप्रकाश था। उनका परिवार जमींदार का होने कारण पिताजी जमींदार थे। गिरिराज किशोर के पिताजी को गाँववाले ही नहीं पास-पड़ोस के गाँववाले भी जानते और मानते थे। सूरजप्रकाश की दूसरी पत्नी का नाम श्रीमती रामदुलारी है। उनकी रघुराज, शिवराज, रामराज, कु.उषा ये संताने हैं। यहाँ स्पष्ट है गिरिराज को विमाता की भी अनुभूति प्राप्त हुई। उनकी विमाता को पाँच संतानें हुई है। सूरजप्रकाश जी ने अपने बच्चों पर अच्छे संस्कार किये। वे अंग्रेजी के समर्थक थे। उन्हें घोड़ों रिश्तरे का शौक था। साथ ही वे व्यवहार कुशल और शांत स्वभाव के मेहनती थे। माता-पिता की प्रेरणा से गिरिराज जिंदगी में आगे बढ़े। इनके पिता का देहांत 28 जून, 1988 को मुजफ्फर नगर में हुआ।

1.1.4 परिवार -

गिरिराज किशोर का परिवार जमींदार और प्रतिष्ठित था। इनके तीन भाई और दो बहने हैं। बहनों के नाम है श्रीमती सुभद्रा गुप्ता और उषा अग्रवाल, वे अपने घर में अच्छा सलुक रखते है।

पारिवारिक संबंधों में पत्नी और बच्चों का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है। वे अपने परिवारवालों से बहुत प्यार करते हैं। माता-पिता के प्रति इनके मन में श्रद्धा का भाव है। गिरिराज किशोर की दो कन्याएँ और एक बेटा है। पहली बेटी का नाम जया है, जिसकी शादी हो गयी है और दूसरी बेटी का नाम शिवा है, जिसने इंटरकास्ट मैरेज किया है। बेटा अनिश है। घर का वातावरण आचार-विचार व्यक्तित्व के गठन के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। गिरिराज किशोर के व्यक्तित्व निर्माण में घर के संस्कारों एवं उच्चादर्शों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उनका परिवार बहुभाषी ज्ञानी रहा है। उर्दू, फारसी, अंग्रेजी भाषा के प्रति रुचि, जानकारी रखनेवाला यह परिवार रहा है।

1.1.5 दादाजी -

गिरिराज के दादाजी अनुशासन प्रिय थे। लोग उनका रोब मानते थे। उनकी आवाज में शेर जैसी गुर्राहट थी। उस जमाने में लोग उसी का सम्मान करते

थे जिससे वे डरते थे। दादाजी को लोग रायसाहब कहकर पुकारते थे। रायसाहब कोई खिताब नहीं था, संबोधन की परंपरा थी। गिरिराज उनके इकलौते पोते होने के कारण वे उनको बहुत प्यार करते थे। गिरिराज के शब्दों में ''बाबा जब क्लब से लौटते थे तो पोते के लिए जरूर कुछ न कुछ लाते थे लाकर चुपचाप उसके सिरहने रख देते थे। सबेरे उठते ही पहले हाथ सिरहाने पहुँचता था.... जब कुछ रखा हुआ मिल जाता था तो आँखे खोलता था।''[2]

वे गिरिराज से इतना प्यार करते थे कि अगर गिरिराज खाना नहीं खाते तो वे भी खाना नहीं खाते थे। उन्हें लगता था कि जिस इज्जत और शान के साथ जिये.... उनके बाद उसकी पत रखनेवाला तो कोई हो। उनकी इस आशा को पूरा करने के लिए उनका इशारा अपने इकलौते पोते.... गिरिराज उर्फ मुन्ने पर था।

उनके चाचाजी संगीत में रुचि रखते थे। सितार बजाने में वे माहिर रहे। ऐसा कहा जाता है एक बार उनके दोस्त ने उनकी सितार मांगी और वापस नहीं की, तबसे यह कार्य बंद हुआ। वे आत्मसम्मानी और गुस्सेवाले व्यक्ति रहे है। परिस्थिति के साथ समन्वय करने की उनकी आदत नहीं थी। धर्म के प्रति संवेदनशील, भावुक, आग्रही रहने के कारण रूढ़ि-परंपरा का पालन करते थे इसी कारण पर्दा प्रथा का निर्वहण करनेवाला यह परिवार रहा है। उनकी घर की औरतें घोडागाडी से ही बाहर जाती पर्दा पहनती। लगता है अनोखे संस्कार में गिरिराज पले। दादाजी अंग्रेजी, फारसी, अरबी भाषा के ज्ञानी थे।

1.1.6 शिक्षा-दीक्षा -

यहाँ स्पष्ट है गिरिराज ऐसे प्रतिष्ठित शिक्षित परिवार से है, उन्हें विरासत के रूप में संगीत गीत तथा अनेक भाषाओं का ज्ञान मिला है। उनकी नींव डालनेवाला यह परिवार उनके व्यक्तित्व को सजाने में महत्त्वपूर्ण रहा है। दादाजी, पिताजी, मामाजी की शिक्षा-दीक्षा में अंहम भूमिका रही है। गिरिराज किशोर के

---

2. गिरिराज किशोर - 'क्या यह मेरा समय था' 'कथादेश', फरवरी-2002, पृ.11

परिवार में उर्दु, फारसी और अँग्रेजी का प्रचलन था। गिरिराज किशोर के दादाजी अँग्रेजी, फारसी और अरबी के विद्वान थे। गिरिराज ने अँग्रेजी या फारसी के बजाय पहले दर्जे से ही हिंदी को चुना, जब की घरवालों की इच्छा थी कि वे अंग्रेजी या फारसी ले। पर इन्होंने हिंदी में अपना साहित्य लिखना शुरू किया। किशोर की प्राथमिक शिक्षा मुजफ्फर नगर की पाठशाला में हुई। यहाँ उन्होने 1958 में बी.ए.पास किया।

जमींदारी खत्म हो जाने से घर में आर्थिक संकट के कारण पिताजी ने आगे पढ़ने के लिए मना कर दिया था पर गिरिराज किशोर के मामा आचार्य जुगल किशोर और बहन सत्या गुप्ता ने उन्हें पढने के लिए प्रेरित किया। बाद में आगरा आये जहाँ उन्होंने समाज विज्ञान विषय लेकर इन्स्टीटयूट आफ सोशल साइन्सेज आगरा से 1966 में एम्.एस्.डब्ल्यू किया। इसी बीच इलाहाबाद के "दैनिक हिदुस्तान" में उनकी पहली कहानी "अठन्नी का घिसा हुआ कोना" प्रकाशित हुई थी। उन्होंने नौंवी कक्षा से ही लिखना आरंभ किया, तब से लेकर आज तक निरंतर लेखन कार्य जारी है। गिरिराज किशोर ने पीएच्.डी बीच में ही छोड दी। इन्होंने कविता के साथ नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना आदि विधाओं में अपना लेखन कार्य किया हैं।

पढ़ाई-लिखाई के साथ साहित्य पढ़ने में लगाव रखते हैं। परंतु घरवाले मानते थे गिरिराज सिर्फ पाठ्यक्रम की ओर ध्यान दे तब वे छिप-छिपकर उपन्यास, कहानी पढ़ते ही रहे। अध्ययन की ओर ध्यान न होने से अच्छे छात्र नहीं बने परंतु हिंदी साहित्य के लिए अच्छा साहित्यकार जरूर बने।

1.1.7 नौकरी -

एम.एस.डब्ल्यु होने के बाद गिरिराज किशोर की शिक्षा समाप्त हो गई। सन् 1960 में इलाहाबाद आए। यहाँ उन्हें पहली नौकरी नैनी में नैनी ग्लास वर्क्स में वेलफेअर आफिसर की मिली। किंतु दुर्भाग्यवश एक महीने में नौकरी से हाथ धोना पड़ा। गिरिराज सन् 1960 से 1964 तक सेवा-योजना अधिकारी एवं प्रोबेशन आफिसर रहे। 1964 से 1966 तक इलाहाबाद में स्वतंत्र लेखन किया।

1966 से 1973 तक कानपुर विश्वविद्यालय में सचिव, सहायक सचिव, उपकुलसचिव आदि पदों पर कार्य किया। दिसम्बर, 1976 से 1983 तक आई.आई.टी. कानपुर रचनात्मक लेखन केंद्र के अध्यक्ष बने। उन्हें करीब डेढ़ साल आई.आई.टी. से निलंबित कर दिया गया। फिर वे हायकोर्ट में मुकदमा जीत गये। अपनी सफाई देते हुए वे कहते हैं, "तानाशाह निर्देशक ने निलंबित कर दिया, पर मैं मानता हूँ कि सच्चाई मेरे साथ खड़ी है। सच्चाई में ठोकरे भी खानी पड़ती है, आदमी गिर-गिर कर उठने के अवसरों का धनी भी होता है।"[3] यहाँ स्पष्ट है गिरिराज सच्चाई के साथ जीवनयापन करते है।

31 मई, 1980 को पूरे सम्मान से उसी पद पर बने रहे। 31 जुलाई 1997 को वे सेवा मुक्त हुए। इस स्थिति के बारे में वे प्रियवंद से कहते है, "लेखन मेरे लिए मुख्य है और नौकरी दूसरे नंबर पर है... अगर दूसरी चीज महत्त्वपूर्ण होती तो लेखन छूट जाता। लेकिन लेखन मुख्य था इसलिए नौकरी छूटने का भी कोई खतरा नहीं।"[4]

1.1.8 विवाह -

गिरिराज किशोर का विवाह श्रीमती मीराजी के साथ सन् 1967 ई.में हुआ। मीरा जी के रूप में उन्हें सुशील पत्नी मिली है। मीरा ने हिंदी में एम.ए. एवं बी.टी.की पढाई की है। उन्होंने कुछ समय तक दिल्ली में अध्यापन का कार्य किया है। सहधर्मिणी के समस्त उत्तरदायित्व को निभाते हुए गिरिराज किशोर की साहित्य साधना में काफी योगदान दिया है। पत्नी के बारे में गिरिराज बताते है, "जबर्दस्त आलोचक है पत्नी मेरे लेखन की। मेरी कहानियाँ इन्हें पसन्द नहीं आती। हाँ उपन्यास अब पसन्द आने लगे है। हाँ बेटा अनिश भी पढ़ता है, टिप्पणी करता है। पहला गिरमिटिया के यही लोग पहले पाठक है।"[5] मीरा जी ने गिरिराज का हौसला बुलंद रखा और गृहस्थी की कमान सँभाले रखी।

---

3. संपा.बलराज - 'अपने आस पास -,पृ.32

4. सारिका पत्रिका, 1 सितंबर, 1981, पृ.14-15

5. 'नया ज्ञानोदय', 16 जुन, 2004, पृ.38

1.1.9 दांपत्य जीवन -

यह सच्चाई है कि दांपत्य जीवन सफल परिवार का प्रतीक है। यह दोनों पर निर्भर है। गिरिराज का परिवार आदर्श है, जो हरदम एक साथ रहते है। विवाह मन का मिलन रहा है, दांपत्य जीवन को मजबूत करनेवाली यह व्यवस्था है जिसका प्रभाव गिरिराज के व्यक्तित्व पर रहा है। गिरिराज के वैवाहिक जीवन में मीरा जी एक सच्ची जीवन संगिनी है। उन्होंने जीवन के हर सुख-दुख में गिरिराज किशोर का साथ दिया है। गिरिराज किशोर को लेखन कार्य में जहाँ-जहाँ आवश्यकता हो वहाँ मीरा जी ने सहायता की है। पत्नी की प्रेरणा और सहयोग से किशोर जी को काफी सफलता मिली है। मीरा जी सरल स्वभाववाली शांत नारी है। वह स्वभाव से मृदुभाषी, मिलनसार एवं व्यवहार कुशल है। पढ़ने में रुचि रखती है। उनका मानना है कि, जीवन को देखने का सबका अपना एक दृष्टिकोन होता है। किसी गलती को हमें समझ लेना चाहिए। वे हमेशा उत्साहित रहती है और अधिकार से बातें करती है। साहित्य में बौद्धिकता के साथ सरसता होनी चाहिए ऐसा उन्हें लगता है।

गिरिराज किशोर का वैवाहिक जीवन पूर्णतः संतुष्ट है। मीरा जी ने गिरिराज किशोर को सफल साहित्यकार बनाने में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है। इस संदर्भ में गिरिराज किशोर का कहना है, ''मेरे घरवालों का सहयोग तो अद्वितीय है ही, खास तौर से मेरी पत्नी मीरा का। वे मेरी जबरदस्त क्रिटिक है। परंतु मेरे कामों में भरपूर सहयोग देती है।''[6] मीरा जी ने केवल प्रारंभिक दिनों में ही नहीं बल्कि जिंदगी भर भारतीय स्त्री के ऊँचे आदर्शों का पालन किया है और संकट में सहायता की है। उनका वैवाहिक जीवन सुख-शांति से बीत रहा है।

यहाँ स्पष्ट है पारिवारिक संस्कार, दादाजी की विरासत, पत्नी का सहयोग, सृजनशील व्यक्तित्व, ज्ञान-लालसा आदि अनेक कारणों से गिरिराज जी का जीवन सार्थक बना है।जो देखा,समझा, अनुभव किया उसे शब्द बद्ध करने का

---

6. गिरिराज किशोर, ''पहला गिरमिटिया'', पृ.16

कार्य उन्होंने किया। अतः हर एक साहित्यकार का साहित्य तभी कालजयी बनता है जो समकालीन जीवन को जीता है, लिखता हैं। समकालीन कथा साहित्य को दिशा देने में गिरिराज का योगदान महत्त्वपूर्ण है। उनकी जीवनी साहित्य का आधार बनी तो उनकी रचनाएँ तत्कालीन समाजजीवन का दर्पण बनी है। स्पष्ट है साहित्यकार के कृतित्व पर विचार करते समय उनके व्यक्तित्व को देखना अनिवार्य है। इसके लिए गिरिराज अपवाद नहीं हैं। एक सार्थक सफल जीवन की यह कहानी हैं।

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ -

व्यक्ति समाज में रहता है। सामाजिक वातावरण से व्यक्तित्व का निर्माण होता है। उनपर अतीत और वर्तमान, साहित्यकारों, महापुरूषों एवं परिस्थितियों का भी प्रभाव पड़ता है। गिरिराज पर भी इन सभी का प्रभाव पड़ा दिखाई देता है। गिरिराज किशोर का व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक है। उनसे एक बार मिलने पर व्यक्ति उनकी तरफ आकर्षित हो जाता है। उनका एक अलग ही व्यक्तित्व है, जो औरों से हटके लगते है। डॉ.बलराजसिंह राणा का मत है, ''वस्तुतः व्यक्तित्व व्यक्ति के लक्षणों की समष्टि एवं उसके व्यवहार का दिशा निर्देशक कहा जा सकता है। व्यक्तित्व एक विकासशील प्रक्रिया है। व्यक्ति के जन्म लेने से मृत्यु तक उसके व्यक्तित्व में निरंतर परिवर्तन एवं विकास होता रहता है। जन्म के बाद सबसे पहले माता-पिता, परिवार, संस्कृति, परिवेश और समाज का प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता हैं। यह प्रभाव परिस्थिति, वातावरण और परिवेश के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।''[7] गिरिराज का व्यक्तित्व भी इन्ही परिस्थिति से उभर कर एक महान् लेखक के रूप में हमारे सामने हैं। इनके व्यक्तित्व का अंतरिक और बाह्य व्यक्तित्व को निम्न प्रकार से हम देख सकते है।

1.2.1बाहय और आंतरिक व्यक्तितत्व -

गिरिराज किशोर का बाहय व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक और

---

7. डॉ.बलराजसिंह राणा, 'उपन्यासकार जैनेंद्र के पात्रों में मनोवैज्ञानिकता, पृ.54

मोहक है। गौर वर्ण, ऊँचा कद दीप्तिमान चेहरा प्रथम दर्शन में ही देखने वाले की दृष्टि को बांध देता है। उनका चश्मा उनके व्यक्तित्व को गंभीर बना देता है। चश्मे से झांकती आँखें असीम स्नेह का भाव दिखाती है। उनकी आँखें किसी भी चीज की गहराई को नाप तोल लेती है। उनके व्यक्तित्व के बारे में सुमनराजे का कहना है, ''मैंने देखा बुद्धिजीवियों के अतिरिक्त चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी तो उनके भक्त है। शायद उनकी रचनात्मकता के मानवीय स्तर ने उन सबको बाँध लिया है। अक्सर ऐसा होता है, कोई उनसे मिलने आ जाता है, वे पूरी आत्मीयता से बात करते हैं।''[8] बाहर से सीधे-साधे दिखनेवाले गिरिराज अंदर से उतने ही सरल है।

1.2.2बुद्धिमानी गिरिराज किशोर -

बचपन से ही किशोर की साहित्य में रुचि थी। उन्होंने अपना साहित्य लेखन अल्पायु में शुरू किया। हाईस्कुल एवं इंटर की कक्षाओं में अध्ययन करते हुए कहानियाँ लिखना, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ना आरंभ कर दिया था। उन्होंने ''लेखन कार्य की शुरूआत नौंवी कक्षा से की।''[9] उनका शौक पुस्तके और पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ना था। इससे उनके व्यक्तित्व में ये प्रेरणा निरंतर बनी रही। शरद बाबू, प्रेमचंद, प्रसाद, अज्ञेय, जैनेंद्र, यशपाल आदि की रचनाएँ पढते थे, जिससे उनका साहित्यकार रूप निखरा, तथा वही उनका प्रेरणास्रोत बना। उनका चिंतन, उनपर हुए संस्कार, साहित्य का अध्ययन सोचने के लिए विवश करता है। बुद्धिमानी गिरिराज इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहे।

1.2.3 गहन अध्येता गिरिराज किशोर -

स्वतंत्र साहित्य-सृजन के लिए गिरिराज किशोर ने देशी-विदेशी पुस्तकों का विस्तृत अध्ययन किया है। अंग्रेजी साहित्य का भी उन्हें ज्ञान है। सुमन राजे उनके गहन अध्ययन के बारे में कहती है -

''गिरिराज नियमित रूप से रोज सुबह लिखते है। उनकी एकाग्रता भी गजब की है....वार्तालाप के बीच भी उनकी रचनात्मक प्रक्रिया सजग और सक्रिय

---

8. 'सारिका' पत्रिका, 1 सितंबर 1981, पृ.16
9. गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद' (प्रस्तावना से उद्धृत)

रहती है। 'उस' के जाते ही वे फिर शुरू हो जाते हैं। कहीं कोई टुटन नहीं, विश्रृंखलता नहीं कोई शिकायत नहीं परहेज भी नहीं।''[10]

यहाँ स्पष्ट है गहन अध्येता के लिए अध्ययन, चिंतन, आत्मविकास, इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। ध्यान से पढ़ना अनिवार्य होता है। देश-विदेश की अनेक रचनाएँ पढ़ना उनके गहन अध्येता का प्रमाण है। निश्चित दिनक्रम, अध्ययन में एकरसता, सलगता होने के कारण उनका अध्ययन प्रभावी बना। उन्हें सफल साहित्यकार बनाने में गहरा अध्ययन उपयुक्त, सहाय्यक रहा है।

1.2.4 विभिन्न रचनाकारों से प्रभावित गिरिराज किशोर -

लेखक के व्यक्तित्व पर समाज, परिवार, गुरु के साथ ही भारतीय एवं पाश्चात्य लेखकों का भी प्रभाव रहा है। जैसे-जैसे लेखक की रचनात्मकता विकसित होती है, वैसे-वैसे उनकी समझ और सोच भी बढ़ती है। गिरिराज किशोर पर प्रेमचंद की सरल विद्वत्ता, शरतचन्द के व्यक्तित्व की सहजता, प्रसाद, अज्ञेय, यशपाल, नरेश मेहता, कृष्णा सोबती, अमरकांत, शैलेश मटियानी, राजेंद्र यादव, हरिशंकर परसाई, मुक्तिबोध आदि अनेक साहित्यकारों का प्रभाव पड़ा। साथ ही टालस्टाय, चैखव, काफी आस्कर वाइल्ड, जेम्स ऑस्टिन, बर्नेड शौ आदि विदेशी साहित्यकारों का प्रभाव पड़ा। उनके सृजनात्मक व्यक्तित्व को इससे रचनाशीलता और समीक्षक व्यक्तित्व की चिंतनशीलता प्राप्त हुई है।

गिरिराज पर अन्य महान् साहित्यकारों का प्रभाव होने से उनका साहित्य समाज से जुड़ा रहा, उनकी रचनाएँ समकालीन बनी है। रामस्वरूप द्विवेदी का कथन है, ''जो रचना सामाजिक सम्बन्धों के समग्र विकास के जीवित संस्पर्श को सर्जित और सम्प्रेषित करती है, वही समकालीन होती है।''[11] यह कथन गिरिराज किशोर की रचनाओं पर सही उतरता है।

---

10. 'सारिका' पत्रिका, 1 सितंबर 1981, पृ.16

11. रामस्वरूप द्विवेदी - समकालीन रचना-आलोचना, पृ.5

1.2.5 साहित्य लेखन में रूचि रखनेवाले गिरिराज किशोर -

गिरिराज किशोर की बचपन में माँ के आचल की छाया न मिलने से उनकी जिंदगी में बेगानापन आया, तब उन्होंने घरवालों से छिप-छिपकर उपन्यास पढ़े और उससे प्रभावित हुए। उनपर लेखकों के विचारों का प्रभाव इतना गहरा पड़ा कि उनके मन में साहित्य लेखन की इच्छा तीव्र हो गई। वे बताते हैं, ''छठीं क्लास से लिखना और अब तक लिखते चला जाना अपनी ही एक ऐसी खोज का सिलसिला है जिसका ताजिंदगी रूकना मुश्किल है।''[12] गिरिराज बुद्धिमान और गहन अध्ययन वाले व्यक्ति हैं। वे साहित्य को गहराई से देखते है। अपने लेखन के बार में वे बताते हैं, ''कहानियाँ तो मैं छठे-सातवे दर्जे से लिखने लगा। पर उनका कोई मतलब नहीं था। मेरी एक कहानी 'रत्न कटारी घी जले...' कालिज मैगजीन में नवी क्लास में छपी थी। उस कहानी की सीनियर क्लास की एक लड़की ने तारीफ की थी उसके बाद मैंने तारीफ सुनने के लिए कई कहानियाँ लिखी और मौका पडने पर तारीफ भी की थी।''[13] वे सीहत्य-सृजन को अपना धर्म मानकर ईमानदारी से निभाते है।

समाज जीवन, राजनीतिक स्थिति, मानसिक अंतर्द्वंद्व, संघर्ष को रेखांकित करनेवाले गिरिराज किशोर के संदर्भ में मयुरेश लिखते हैं,''किशोर का लेखन राजनीतिक, सामाजिक विसंगतियों और अन्तर्विरोधी की गहरी पहचान का लेखन है।''[14] उनकी रचनाओं का अपना ही महत्त्व रहा है। डॉ.चंद्रकांत बादिवडेकर जी के शब्दों में ''हिंदी उपन्यासकारों ने इस चुहे-दानी के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक या कुल व्यवस्था की जड़ों पर या सीखंचों पर मुँह मारने का कार्य किया है। इस बोध के साथ कि वह सारी यात्रा, निराशा, हार, टूटन से युक्त है। गिरिराज का 'इंद्रसुने' या श्रीसल का 'रामदरपाठी' उपन्यास उलेखनीय है।''[15]

12. सं.बलराज - 'अपने आसपास', पृ.45
13. 'कथादेश' पत्रिका, फरवरी - 2002, पृ.8-9
14. मयुरेश - समकालीन हिंदी उपन्यास - संवेदना और सरोकार, पृ.62
15. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर - आधुनिक हिंदी उपन्यास, सृजन और आलोचना, पृ.8

यहाँ स्पष्ट है गिरिराज की रचनाएँ सार्थक है।

1.2.6 गांधीवादी गिरिराज किशोर -

गिरिराज जी गांधीजी की ओर बचपन से ही आकृष्ट रहे हैं। इसके साथ ही आचार्य जुगल किशोर गांधी जी के साथ रहे थे। वे गांधी जी के बारे में बहुत सी बातें बताते थे जिससे गिरिराज प्रभावित हो गए। परिणामतः वे गांधी जी की तरफ आकर्षित हो गये। उन्हें लगता है कि, ''गांधी जी के बारे में लोग जानते हुए भी कम जानते है। मैं समझता हूँ कि गांधी जी के बारे में लोगों को बहुत कुछ जानना बाकी है। अगर हम गांधी जी को वापस ला पायेंगे तो यह महत्त्वपूर्ण बात होगी। गांधी जी को जानना बहुत जरूरी है।''[16] गांधीजी से इतने प्रभावित हुए। वे कहते है कि, ''गांधी जितना अपमानित व्यक्ति मुझे इतिहास में कोई दूसरा दिखाई नहीं देता - अंतिम क्षणतक वे अपमानित होते रहे। गांधी ने समाज के छोटे-से-छोटे व्यक्ति के बारे में जितना सोचा और किया किसी अन्य ने नहीं।''[17] इस प्रकार गिरिराज पर गांधीवाद का प्रभाव पड़ा है, जिससे प्रभावित होकर 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास लिखा है।

यह सच है भारतीय राजनीति के मसीहा गांधी जी एक व्यक्ति ही नहीं बल्कि एक विचार, दर्शन रहे है। राजनीति के साथ ही साथ भारतीय साहित्य, साहित्यकारों को भी प्रभावित किया है। गिरिराज का जीवन और साहित्य भी इस प्रभाव से अछूता नहीं रहा।

1.2.7 ईश्वरवादी गिरिराज किशोर -

गिरिराज किशोर ईश्वरवादी है। पूजा-पाठ में विश्वास रखते हुए कहते है, ''जैसे शरीर के लिए वर्जिश जरूरी है वैसे ही मानसिक दकियानुसी न समझा जाय तो आत्मिक विकास के लिए ध्यान जरूरी है। मेरा पूजा-पाठ किस कट्टरवाद का अंश नहीं, बल्कि संवेदना के विकास का माध्यम है।''[18]

---

16. 'मधुमती' पत्रिका, जुलाई 1995, पृ.33-34
17. वही, पृ.34
18. 'मधुमती' पत्रिका जुलाई 1995, पृ.35

गिरिराज किशोर को नाटक के लिए जब पुरस्कार मिला तब वह लेने इलाहाबाद आये, वहाँ मित्र ने रूकने के लिए कहा। लेकिन उन्होंने वापसी कि तैयारी की तब मित्र को मालूम हुआ कि "वह अपना पूजा का सामान साथ नहीं लाया था। अगर रूक गया तो पूजा कैसे करेगा। उसके व्यक्तित्व का एक वैष्णव पक्ष मेरे सामने उजागर हो गया। मैंने उसे विदा करना ही उपयुक्त समझा। वास्तव में गिरिराज सच्चे साधक है।"[19]

यहाँ स्पष्ट है गिरिराज का व्यक्तित्व वैष्णव विचारधारा से प्रभावित रहा है। धार्मिक कट्टरता नहीं परंतु यह सच है कि हर एक की अपनी-अपनी मान्यताएँ रही है। अंततः श्रद्धा, विश्वास, भरोसा मानव की मुल प्रवृत्ति है। गिरिराज इसके लिए अपवाद नहीं है।

1.2.8 संकटमोचन गिरिराज किशोर -

गिरिराज किशोर दूसरों के हित के बारे में सोचते है। उनके साहित्य में भी लोकमंगल की भावना दिखाई देती है। कोई भी संकट में हो और उन्हें खबर हो जाये तो वे तुरंत उसकी मदद के लिए जाते है। अगर किसी योग्य किंतु तंगहाल लेखक की बिटिया के विवाह का प्रश्न उठा तो गिरिराज किशोर ने उसकी पुस्तक पाठ्यक्रम में निर्धारित करवाने में मदद करके उसे बचाया। गिरिराज किसी काम में इलाहाबाद आये तो ममता ने मजाक में बताया कि उसका अध्यापन का अनुभव बेकार जा रहा है। तो गिरिराज तुरंत सक्रिय हो गये और बताया कि उनके विश्वविद्यालय से संबंध एक कॉलेज में स्थान रिक्त है, उन्होंने तुरंत फोन लगाया और स्थायी प्रिंसिपल के पद पर ममता को नियुक्त किया। "ममता को कॉलेज के संबंध में जब-जब किसी कठिनाई का सामना करना पड़ा गिरिराज जी ने चुटकियों में समस्या हल कर दी।"[20] एक मित्र के भाई नौकरी के लिए परेशान थे तब गिरिराज ने उसे आई.आई.टी.में लगवा दिया। इसप्रकार गिरिराज का दूसरों को मदद करनेवाला व्यक्तित्व रहा है।

---

19. रवींद्र कालिया, 'सृजन के सहयोगी' (संस्मरण), पृ.29
20. वही, पृ.24

साहित्यकार भावुक रहता है। दूसरों की सहायता करनेवाले गिरिराज हैं। दोस्तों के लिए मददगार रहें। किशोर का व्यक्तित्व सभी के लिए लाभकारी रहा है। हर संकट में दूसरों के लिए हाथ बढ़ानेवाले गिरिराज सही अर्थों में साथी, दोस्त ही हैं। उनका साहित्य भी समाज के लिए मददगार ही हैं।

1.2.9 आम आदमी के रचनाकार गिरिराज किशोर -

गिरिराज के रचनाओं में समाज के सभी वर्गों का चित्रण किया गया है। आम आदमी के चित्रण में डॉ.सुरेश सदावर्ते का मत है,"उनका रचना संसार आदमी से सरोकार रखता है.... समसामयिक समाज जीवन की पहचान, उसमें जीवनयापन कर रहे आदमी की तकलीफ उसका संघर्ष, पूरी प्रामाणिकता के साथ अपनी रचनाओं में उतारने की कोशिश करते हैं।"[21] इसके अतिरिक्त सुमन राजे लिखते हैं, "बड़े-बड़े बुद्धिजीवियों के अतिरिक्त चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी तो उनके 'भक्त' हैं।"[22]

दलित, आदिम, मगहर, विधवा, किसान, उपेक्षित, शोषित की करुण कथा को वाणी देने का कार्य उन्होंने किया है। 'यथा प्रस्थापित', 'परिशिष्ठ' आदि में दलित जीवन की कथा है। पढ़े-लिखे दलित विद्रोही बनकर अस्तित्व की रक्षा कर रहे हैं - इस पर भी प्रकाश डाला है। दलित जीवन की त्रासदी का यह दस्तावेज है।

1.2.10 निस्वार्थी गिरिराज किशोर -

गिरिराज किशोर ने निस्वार्थ भाव से सबकी सेवा की ऐसे कई लोगों से संबंध बनाये जिसका कोई मतलब नहीं। किसी भी फल की अपेक्षा किये बिना सबको मदद करते है। सुख-दुःख में सहायता करते है।

स्पष्ट है गिरिराज का व्यक्तित्व आम आदमी जैसा बहुआयामी रहा है। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी उठाते हुए अपना सामाजिक दायित्व भी निभाते रहें। साहित्यकार,परोपकारी चिंतक,निस्वार्थी, विभिन्न विचारधाराओं से प्रभावित,

---

21.डॉ.सुरेश सदावर्ते, 'कथाकार गिरिराज किशोर', पृ.173

22. 'सारिका' पत्रिका, 1 सितंबर 1981, पृ.16

ईश्वर पर भरोसा रखनेवाले, गांधीवादी, गहन अध्येता आदि सभी गुणों से उनका व्यक्तित्व रहा है। उनके साहित्य में भी इसका प्रभाव है। सामाजिक और साहित्यिक अनेक योगदान देनेवाले गिरिराज किशोर एक महत्त्वपूर्ण रचनाकार है।

1.3 रचना संसार -

गिरिराज किशोर ने अपने लिखने का प्रेरणा स्त्रोत अपनी बहन डॉ.सत्या गुप्ता को माना है। वे नियमित रूप से लिखते रहे हैं। समाज को देखते रहे, जिंदगी को समजते रहें। सभी स्तर के व्यक्ति से वे मिलते रहें, उनको साहित्य में चित्रित किया है। लगता है साहित्य के स्तर पर सभी को बांधने की वे क्षमता रखते है। इसीकारण उनका साहित्य बहुआयामी और समृद्ध बना है, साहित्य के विविध आयामों को अपनाने वाले गिरिराज किशोर उपन्यासकार, कथाकार , नाटककार, निबंधकार, समीक्षक आलोचक, विचारक के रूप में पहचाने जाते हैं।

अपनी जीवनानुभूति को चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए उसे गहराई से यथार्थ से जोडकर शब्दबद्ध किया है। उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध सभी रचनाएँ जीवन के गहरे अनुभवों से उपजकर निकलती हैं। भाव, भाषा, अनुभव के स्तर पर उनका कृतित्व चिंतनीय,पढ़नीय और बहुआयामी बना है। साहित्य सृजन को अपना धर्म माननेवाले गिरिराज किशोर ने साहित्य को दिशा एवं गति देने का प्रयास कियास है। वे प्रयोगधर्मी रचनाकार है। लगता है उनकी कलम अविरत सृजनात्मकता से जुड़ी है, उनका जीवन लक्ष्य साहित्य निर्मिति है। उनकी रचना 'इंद्रसुने' के संदर्भ में डॉ.गोपाल लिखते है,''उपन्यासकार ने अपनी फांतसी में मृत्युलोक, देवलोक और परलोक के कार्य व्यापारों और मानसिकता को गुथकर आज के सामाजिक,आर्थिक और सांस्कृतिक वैषम्य को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।''[23] स्पष्ट है अपने साहित्य में समाज जीवन को कुरेदने का प्रयास किया है।

---

23. संपा.महिपसिंह - हिंदी उपन्यास समकालीन परिदृश्य, पृ.41

गिरिराज किशोर के साहित्य का महत्त्वपूर्ण पक्ष है भाषा। हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, देशज बोली और रोजमर्रा की भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। स्वाभाविकता, स्पष्टता, यथार्थतता को अपनानेवाली उनकी भाषा पाठकों को खींच लेती है। राजेंद्र यादव गिरिराज की भाषा के संदर्भ में कहते हैं, ''छोटी-छोटी अनुभूतियों को बिंबों-विजुअलस और बिंबों को भाषा की सांकेतिकता में व्यक्त करने की शैली शायद अकेले गिरिराज किशोर के पास है।''[24]

डॉ.सुरेश सिन्हा के शब्दों में,''गिरिराज के पास स्पष्ट एवं स्वस्थ जीवन दृष्टि है और आधुनिक यथार्थ से वे पूर्ण परिचित है। उनकी कहानियों में सूक्ष्म प्रतीक विधान, वातावरण का गहरापन और चरित्रचित्रण की सांकेतिकता विशेष रूप से दृष्टव्य है। सामाजिक, सौंदर्य को उन्होंने कभी अस्वीकारा नहीं है और निरंतर सूक्ष्म से सूक्ष्म धरातल पर उसे अभिव्यक्त करने की चेष्टा की है।''[25] अतः स्पष्ट है समाजजीवन को यथार्थ रूप में स्पष्ट करनेवाले रचनाकार किशारे जी का साहित्य बहुआयामी होने के साथ-साथ समीक्षकों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। बहुआयामी साहित्य का सृजन करनेवाले किशोर का साहित्य एवं कृतित्व पर सोचना अनिवार्य है। साहित्य की सभी विधाओं में कलम चलानेवाले साहित्य के सिपाही गिरिराज हैं।

गिरिराज किशोर का रचना संसार बहुविध है। उन्होंने कविता छोड़कर बाकी सभी विधाओं में साहित्य लेखन किया है। उपन्यास, कहानी, नाटक,आलोचना,एकांकी, बाल साहित्य, निबंध आदि विधाओं में साहित्य लेखन किया है। किशोर के बारे में डॉ.सुरेश सदावर्ते लिखते हैं, ''गिरिराज किशोर उन विशिष्ट कथाकारों में से एक है, जिन्होंने अपनी रचनाओं को जिंदगी के अनुभवों से जोड़ने की चुनौती का स्वीकार किया है और उन्हें गहरे यथार्थ से जोड़ा है। उनमें उतनी ही विविधता है, जितनी जीवन में होती है। चाहे उपन्यास हो,

---

24. राजेंद्र यादव - 'अठारह उपन्यास', पृ.177

25.डॉ.सुरेश सिन्हा - हिंदी कहानी उद्‌भव और विकास, पृ.67

कहानी हो, या नाटक हो सब जीवन के गहरे अनुभवों से उपजकर निकलते है।''[26]

गिरिराज किशोर महान् साहित्यकारों में से एक है। उनके साहित्य निर्माण के पीछे व्यक्ति और समाज का यथार्थ चित्रण है। जनकल्याण की भावना है। वे अपने पीढ़ी के तमाम रचनाकारों से भिन्न है। उनका कृतित्व निम्नलिखित है।

1.3.1 उपन्यास -

उपन्यास	प्रकाशन	प्रकाशन काल
1) 'लोग'	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,	1966 ई.
2) 'चिड़ियाघर'	सरस्वती विहार, शाहदरा, नई दिल्ली	1968 ई
3) 'यात्राएँ'	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,	1971 ई.
4) 'जुगलबंदी'	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,	1973 ई.
5) 'दो'	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,	1974 ई
6) 'इंद्रसुने'	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,	1978 ई.
7) 'दावेदार'	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,	1978 ई.
8) 'तीसरी सत्ता'	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,	1982 ई.
9) 'यथा प्रस्तावित'	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,	1984 ई.
10) 'परिशिष्ट'	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,	1984 ई.
11) 'असलाह'	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,	1987 ई.
12) 'अंतर्ध्वस'	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,	1990 ई.
13) 'ढाई घर'	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली,	1991 ई.
14) 'यातना घर'	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली,	1997 ई.
15) 'पहला गिरमिटिया	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली,	1999 ई.

इसके अतिरिक्त उनके दो खंडों में आठ उपन्यास 'अष्टाचक्र' नाम से आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली द्वारा सन् 1998 ई में प्रकाशित हुए है। इन दो खंडों में लोग,चिड़ियाघर, यात्राएँ, दो, इंद्रसुने, दावेदार, यथा प्रस्तावित,

26. डॉ.सुरेश सदावर्ते, 'कथाकार गिरिराज किशोर', पृ.173

असलाह आदि उपन्यास सम्मिलित किए हैं।

उपन्यास समाज की प्रतिछाया है। उपन्यास में मनुष्य के सामाजिक, असामाजिक कृत्यों का ईमानदारी से चित्रण हुआ है। उपन्यास की कथा बाहय जगत ही नहीं है, मानव मन की गहराइयों की मनोवैज्ञानिक आधार पर अभिव्यक्ति भी है। उपर्युक्त उपन्यासों में गिरिराज ने निम्न बातों को स्पष्ट करने की कोशिश की है।

गिरिराज किशोर ने अपने 'लोग' में भारत के स्वातंत्रतापूर्व के कुछ वर्षों का सामाजिक, राजनीतिक स्थिति का चित्रण किया है। सामंतों, जमींदारों तथा रायसाहबों का वर्णन किया है। 'चिड़ियाघर' में शहर के रोजगार, दफ्तर और उसके अफसरों की कुत्सिक मन प्रवृतियों, गुट्टबाजी, नवयुवकों के बेरोजगारी की समस्या, दफ्तर में व्याप्त भ्रष्टाचार, महिला अफसर के अफिशियल लोगों के साथ कामुक संबंध आदि का चित्रण किया गया है। हमारे शोषित सामाजिक वातावरण को उभारते है। 'यात्राएँ' उपन्यास में गिरिराज जी ने 1942 के अंग्रेजों भारत छोडो राष्ट्रीय जनांदोलन एवं द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि को भी लिखा है। साथ ही आधुनिक युग में पातिव्रत्य और सतीत्व के भाव कितने मूल्यहीन हो गए है इसका भी उल्लेख किया है। उनके 'दो' उपन्यास में आधुनिक नारी ऐसे मकाम पर आ गई है कि वह अपने अस्तित्व के लिए परंपराओं और रूढ़ियों को तोड़ने के लिए तैयार है। यहाँ समाज व्यवस्था में नारी की असहाय, दयनीय स्थिति तथा जीवन संघर्ष का हृदयस्पर्शी चित्रण देखने को मिलता है।

'इंद्र सुने' में यांत्रिकी पर पूँजीपतियों एवं राजनीतिज्ञों के आधिपत्य और श्रमजीवियों की विडंबना को अभिव्यंजित करता है। गिरिराज किशोर ने वर्तमान सामाजिक यथार्थ के नितांत अच्छूते पहलुओं को भी रेखांकित करने का प्रयास किया है। उन्होंने ग्रामीण जीवन एवं कृषि व्यवस्था के विघटन एवं विध्वंस का भी चित्रण अपने उपन्यास में किया है। आम आदमी की समस्याओं, प्रश्नों, एवं दुःख, दर्द यातनाओं को लिखा है। आज के युग में दांपत्य जीवन के बिखराव को अपने 'तीसरी सत्ता' उपन्यास में वर्णित किया है। इसके साथ पिछड़ी जाति के

एक हरिजन कर्मचारी के प्रति दफ्तर के अन्य कर्मचारी एवं अफसरों के व्यवहार और उसके परिणाम को भी चित्रित करते है। भारतीय दलित वर्ग की तमाम त्रासद स्थितियों और मानवीय आवश्यकताओं को विश्लेषित किया है। गिरिराज ने शिक्षा, धर्म, समाज, राजनीति, प्रशासन, आदि जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुसूचित वर्ग को प्राप्त यातनाओं का चित्रण यथार्थ रूप में किया है। ज्वलंत समस्याओं से आतंकित मानव सभ्यता तथा विश्वयुद्ध के बढ़ते संकट उसके तमाम दुष्परिणामों के साथ चित्रित किया है। वैज्ञानिक स्थिति को स्पष्ट किया है। 'ढाईघर' में अंग्रेजी शासन काल से लेकर स्वतंत्रता तक की कथा है। जिसमें समाज में बदलते संबंधों का रेखांकन हुआ है।

शिक्षा और संस्कृति, अस्मिता और विकास की यात्रा कहाँ से कहाँ पहुँच गई है? इसका त्रासद चित्रण 'यातना घर' में किया गया है। उनका व्यास सम्मानित 'पहला गिरमिटिया' महात्मा गांधी के दक्षिण आफ्रिकी अनुभवों पर तथा भारतीय मजदूरों और व्यापारियों के पारस्पारिक संबंधों तथा संघर्षों पर केंद्रित है। गिरिराज जो एक सफल उपन्यासकार है। उनके उपन्यास में यथार्थ स्थिति का चित्रण मिलता है।

1.3.2 कहानी -

	कहानी संग्रह	प्रकाशन	प्रकाशन काल
1)	'नीम के फूल'	किताब महल, जीरो रोड, इलाहाबाद,	1964 ई.
2)	'चार मोती बेआब'	भारती भंडार, लीड़र रोड, इलाहाबाद,	1964 ई.
3)	'पेपरवेट'	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,	1967 ई.
4)	'रिश्ता और अन्य कहानियाँ'	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,	1968 ई.
5)	'शहर-दर-शहर'	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,	1976 ई.
6)	'हम प्यार कर ले'	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,	1980 ई.
7)	जगत्तारनी एवं अन्य कहानियाँ	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,	1981 ई.

8) गाना बडे गुलाम अली खाँ का' — नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1986 ई.

9) 'वल्दरोजी' — वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989 ई.

10) 'यह देह किसकी है।' — भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1992 ई.

11) 'लहु पुकारेगा' (संपा.) — सरस्वती प्रकाशन, नई दिल्ली,

इसके अतिरिक्त पांच खंडों में उनकी 'सम्पूर्ण कहानियाँ' प्रवीण प्रकाशन, महशैली रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है, तथा 'मेरी राजनीतिक कहानियाँ' आत्माराम एण्ड सन्स, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है।

गिरिराज किशोर ने लेखन की शुरूआत कहानी से की है। इनकी कहानियों में भी सभी क्षेत्रों का चित्रण मिलता है। वे एक सफल कथाकार है। इन्होंने कथा साहित्य में अच्छा योगदान दिया है। इनके बहुत से कहानी संग्रह है, जैसे नीम के फूल, पेपरवेट, रिश्ता और अन्य कहानियाँ, शहर-दर-शहर, हम प्यार कर ले, गाना बड़े गुलाम अली खाँ का' आदि परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। जैसे आम आदमी का चित्रण, शिक्षा के बारे में सामाजिक विचार किया है। साथ ही दफ्तरी माहौल पर व्यंग्य, दफ्तर के लोगों की कामचोर प्रवृत्ति, टाईमपास, खानापूर्ति, कर्तव्य निष्ठा का अभाव, दफ्तरी लोगों की मानसिकता, जड़ता और प्रशासन का खोखलापन आदि पर व्यंग्य किया है। आर्थिक विपन्नावस्था के कारण दांपत्य जीवन में निर्माण समस्या को भी चित्रित किया गया है। इनकी कहानियों में गरीबों का खून चूस-चूस कर अपना पेट भरनेवाले लोगों की गंदी नियत का पर्दाफाश किया है। गिरिराज जी ने अपने कहानी संग्रह में मुस्लिम परिवेश का जीवन चित्रित किया है, साथ ही विवाह बाह्य संबंधों का वर्णन किया है। उदात्त प्रेम चित्रण के साथ बलात्कारीत नारी की पीड़ा पर प्रकाश डाला है। शहरी जीवन में आम आदमी की समस्या पर विचार किया है। पूरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी में चल रहे संघर्ष को हमारे सामने रखकर टूटते हुए पारिवारिक आदर्शों का उच्च मध्यवर्ग का वर्णन प्रस्तुत किया है। इन्होंने राजनीतिपर भी करारा व्यंग्य किया है।

गिरिराज किशोर ने शिक्षित बेरोजगार युवक की दयनीय स्थिति को दर्शाया है। 'पेपरवेट' में राजनीतिक दुश्चक्र में फंसे आम आदमी का चित्रण है। आर्थिक विपन्नता, मजबुरी, वर्तमान राजनीति, दोगली प्रवृत्ति का चित्रण है। यात्रा का वर्णन भी किया है। इन्होंने प्रशासन, भ्रष्ट पुलिस, देश में फैली अराजकता, शिक्षा विभाग, वर्तमान के 'डिनर' जैसे कार्यक्रम पर व्यंग्य किया है। बाढ़ में अटके लड़का-लड़की का वर्णन भी किया है। महानगरीय जीवन में वर्तमान पारिवारिक संकट को स्पष्ट करने की कोशिश की है। दफ्तरशाही पर तीखा व्यंग्य, आधुनिकता बोध आदि का वर्णन, दफ्तरशाही के चुंगुल में फसे सामान्य आदमी की कहानी चित्रित की है। उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के जीवन का तुलनात्मक वर्णन किया है। अफसर की आत्मग्लानि को रेखांकित किया है। तस्करी से धन कमानेवाले पर व्यंग्य किया गया है। साथ ही नाजायज संबंधों का आज के समाज में मुक्त चित्रण आदि बातों को स्पष्ट रूप में अपनी कहानियों के माध्यम से समाज के सामने रखने की कोशिश गिरिराज किशोर ने की है।

1.3.3 नाटक -

	नाटक	प्रकाशन	प्रकाशन काल
1)	'नरमेध'	नटरंग द्वारा प्रकाशित ,	1972 ई.
2)	'प्रजा ही रहने दो'	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,	1977 ई.
3)	'घास और घोडा'	सरस्वती विहार, शाहदरा, नई दिल्ली,	1980 ई.
4)	'चेहरे चेहरे किसके चेहरे'	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,	1983 ई.
5)	'केवल मेरा नाम लो'	हिंदी साहित्य भवन, कानपुर,	1984 ई.
6)	'जुर्म आयद'	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,	1987 ई.
7)	'काठ की तोप'		

नाटक एवं एकांकी 'रंगापर्ण' नाम से एक खंड में आत्माराम एण्ड सन्स, नई दिल्ली से प्रकाशित है।

गिरिराज किशोर के उपर्युक्त नाटकों की संक्षिप्त चर्चा इस प्रकार है, इनके नाटक सामाजिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक है। इन्होंने नाटकों में मानवीय मनोवृत्ति को प्रकट करने की कोशिश की है। उनका पहला नाटक है 'नरमेध' जो मनोवैज्ञानिक कथावस्तु से संबंधित है। इसमें जीवन की उलझनों और पारिवारिक कुंठाओं का मार्मिक चित्रण किया गया है। इसमें कुंठाग्रस्त विवाहित नारी की मनोवेदना का परिचय दिया गया है। गिरिराज जी का दूसरा नाटक है 'प्रजा ही रहने दो' जो राजनीतिक है। पौराणिक संदर्भ से संबंधित होते हुए भी भ्रष्ट राजनीति के रंग-ढंग का दर्शक, महाभारतकालीक पृष्ठभूमि में राजनीतिक मूल्यहीनता का यह नाटक है। उनका तीसरा नाटक 'घास और घोड़ा' सामाजिक नाटक है। इसमें समाज, कानून और न्यायव्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है। इसमें समाज में फैले अनैतिक संबंधों का चित्रण किया गया है।

गिरिराज किशोर का चौथा नाटक है 'चेहरे चेहरे किसके चेहरे' यह नाटक राजनैतिक विषय वस्तु से संबंधित है। इस नाटक में राजनीति की चर्चा होती है। इसमें सभी पात्र मुखौटा पहने है ये जनता के कल्याण की अपेक्षा स्वार्थ की राजनीतिक चर्चा करते है। इसका वर्णन किया गया है। इसमें मेघनाद, कुंभकर्ण, राम-रावण के प्रसंग से सीता हरण के प्रसंग दूवारा भी व्यंग्य को प्रकट किया है। आम आदमी की निष्क्रियता पर भी प्रहार किया है। मनोवैज्ञानिक विषय से संबंधित नाटकों में दूसरा नाटक है 'केवल मेरा नाम लो' इस नाटक में एक ऐसे नौकरशाह का मनोविज्ञान है जो बाह्य जीवन में एक कर्मठ ईमानदार और सामाजिक सरोकार वाला व्यक्ति है पर भावनात्मक स्तर पर परावलंबी है। जिसकी मानसिकता बिगड़ गई है। जो अपनी बेटी को पापा की जगह अपना नाम लेने के लिए कहता है। बेटी से गलत संबंध रखना चाहता है। उसे पत्नी की जगह देखता है। कुंठाग्रस्त आदमी की मनोवैज्ञानिकता प्रकट करने में नाटककार सफल रहे हैं।

'जुर्म आयद' गिरिराज का छठा नाटक है। ये सामाजिक नाटक है। इसमें एक अनपढ़ नारी की समस्याओं को उठाया है। महिला समाज के दुःख को रेखांकित करनेवाला यह नाटक है। इस नाटक में समाज, पुलिस और

न्यायव्यवस्था किस प्रकार अत्याचार करते है इसको दिखाने की कोशिश की है। सामाजिक कुरीतियों की भयंकरता प्रमुख है। इस प्रकार गिरिराज ने अपने नाटकों में समाज की स्थिति को दर्शाने का काम किया है। वे समाज सुधार के हेतु साहित्य लिखते है।

1.3.4 एकांकी -

1) 'बेगम गुलाम बादशाह', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979 ई.

1.3.5 आलोचना -

1)	'संवाद सेतु'	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली,	1983 ई.
2)	'लिखने का तर्क'	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली,	1991 ई.
3)	'कथ-अकथ'	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,	1991 ई.
4)	'सरोकार'	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली,	1992 ई.
5)	'एक जन भाषा की त्रासदी'	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	
6)	'सप्तपर्णी' (संस्मरण)	किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली	

1.3.6 बालसाहित्य-

1) बच्चों के निराला।

2) सोने की गुडिया।

3) पके सोने के पेड़।

इसके अतिरिक्त किशोर जी ने हिंदी मासिक 'निरंतर' का कई साल तक संपादन कार्य किया है। 'नवभारत टाइम्स', 'जनसत्ता', 'इंडिया-टुडे', 'राष्ट्रीय सहारा', 'हिंदुस्तान' दैनिक, 'रविवार', 'परिवर्तन', 'आजकल', 'हंस', 'सबरंग', 'वागर्थ', 'कथा देश' आदि पत्रिकाओं में रचनाये एवं लेख का प्रकाशन हुआ है।

1.3.7 स्वदेशी एवं विदेशी भाषाओं में अनुदित साहित्य -

1) "ए डेथ इन डेलही (पैगुंइन सिरिज) ....." स्व मी गॉर्डन सी रोडरमल द्वारा

आधुनिक हिंदी कहानियों के संग्रह में सम्मिलित कहानी 'रिलेशनशिप' युनिवर्सिटी आफ कैलिफोर्निया प्रेस बर्कले द्वारा प्रकाशित। अब पैगुंइन (इंडिया) से प्रकाशित।''

2) ''हिंदी कहानियों का जर्मन भाषा में संग्रह' - डा.लोठार लुत्से द्वारा जर्मन भाषा में अनूदित कहानियों के संग्रह में (अलग-अलग कद के आदमी) जर्मन भाषा में अनूदित एवं सिम्मिलित।''

3) 'लिट्रेचर्स डी लीण्डे' (अनूदित) - फ्रेंच भाषा में प्रकाशित कहानी।''

4) 'हिंदी शार्ट स्टोरी' (अंग्रेजी) - सर्वश्री प्रभाकर माचवे एवं श्रवणकुमार द्वारा अंग्रेजी में अनूदित और संपादित संग्रह में 'पेपरवेट' कहानी सम्मिलित।

5) 'यथा प्रस्तावित' एवं 'असलाह' उपन्यास - कन्नड भाषा में अनूदित एवं प्रकाशित और अनेक कहानियाँ भारतीय भाषाओं के अनेक पात्रों में अनूदित एवं प्रकाशित।

6) 'ढाईघर' का प्रसिद्ध पंजाबी कवि डॉ.हरभजनसिंह द्वारा पंजाबी में एवं प्रो.पी.पी.साह द्वारा अंग्रेजी में भी अनुवाद हुआ है।

7) 'यात्राएँ' उपन्यास पर नैदरलैंडस् के लीडन विश्वविद्यालय के हिंदी के प्रोफेसर थियों डेमेस्तेख्त ने लगभग साढे तीन सौ पृष्ठ का विश्लेषणात्मक ग्रंथ लिखा है। जो वहाँ से प्रकाशित हुआ है। किशोर जी की कई कहानियों का फ्रेंच, जर्मनी अंग्रेजी, रूसी आदि तथा भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए है।

1.3.8 साक्षात्कार -

1) प्रो.लोठार लुत्से द्वारा साक्षात्कार और 'लोग' उपन्यास पर विवेचनात्मक टिप्पणी।

2) प्रो.थियो डेमेस्तेख्त द्वारा साक्षात्कार तथा हॉलैंड की टी.वी. कंपनी द्वारा डाक्युमेंट्री फिल्म।

3) दूरदर्शन द्वारा फिल्म एवं साक्षात्कार, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में साक्षात्कार।

1.3.9 विविध रचनाओं पर सम्मान एवं पुरस्कार -

1) 'ढाईघर' उपन्यास पर 1992 का साहित्य एकेडेमी सम्मान।

2) 'परिशिष्ट' पर मध्यप्रदेश साहित्य परिषद, भोपाल द्वारा आखिल भारतीय देव सिंह पुरस्कार।

3) 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' नाटक को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा भारतेन्दु पुरस्कार।

4) 'हिंदी संस्थान द्वारा' "साहित्य भूषण"।

5) उत्तर प्रदेश हिंदी सम्मेलन द्वारा प्रो.वासुदेव सिंह स्वर्ण पदक।

6) इन्टर नेशनल बायोग्राफिकल कॉर्पोरेशन, लंदन से 'इंटरनेशनल आर्डर ऑफ मेरिट'।

7) संगीत नाटक अकादमी, उत्तर प्रदेश द्वारा, नाट्य लेखन पर सम्मान की घोषणा।

8) 1999 के लिए राष्ट्रपति द्वारा भारतीय भाषा परिषद, कलकत्ता का 'शतदल' सम्मान ।

9) उत्तर प्रदेश हिंदी सम्मेलन द्वारा 'भगवती प्रसाद वाजपेयी शताब्दी सम्मान'।

10) के.के.बिरला संस्थान द्वारा 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास को सन् 2000 का 'व्यास' सम्मान।

1.3.10 विदेशी यात्राएँ -

1) सन् 1966 ई.में 14 वी युरोपियन साउथ एशिया कौन्फ्रेंस कोपनहेगन में अपना शोध प्रपत्र प्रस्तुत किया।

2) सन् 1966 ई. में लंदन, जर्मनी की यात्रा।

3) सन् 1995 ई. में गांधी साहित्य के शोध-कार्य हेतु डबरन जोहान्सबर्ग, प्रिटोरिया, तथा मारीशस आदि की यात्राएँ की है।

4) भारत सरकार के आफिशियल डेलिगेशन, पाँचवे विश्व हिंदी सम्मेलन के सदस्य के रूप में उन्होंने सन् 1996 ई.में त्रिनिदाद (वेस्ट इंडिज) यात्रा की।

5) सन् 1999 ई. में भारतीय लेखक प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में इटली यात्रा की। उन्होंने भारत सरकार की ओर से वेनिस विश्वविद्यालय तथा एल्पस विश्वविद्यालय में भाषण दिया है।

1.3.11 राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभाग एवं सदस्य -

1) सन् 1973 ई. में 'नेशनल बुक ट्रस्ट' द्वारा आयोजित भारतीय भाषाओं में लेखकों के राष्ट्रीय शिबिरों में हिंदी का प्रतिनिधित्व।

2) स्व.अज्ञेय जी के नेतृत्व में राम-जानकी यात्रा संपादित की है।

3) वत्सल्य निधि द्वारा आयोजित लखनऊ, वृंदावन एवं जबलपुर में लेखकीय शिबिर में भाग लिया।

4) एन.बी.टी.दिल्ली की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य।

5) राष्ट्रीय तथा आंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में सहभाग लिया।

6) अनेक पुरस्कार समितियों के सदस्य।

7) साहित्य एकेडेमी हिंदी बोर्ड में पाँच साल तक सदस्य।

8) इंदिरा गांधी खुले विश्वविद्यालय द्वारा रचनात्मक लेखन केंद्र की पाठयक्रम समिति द्वारा बनाए गए पाठ्यक्रम का संपादन।

9) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'एमेंरिटस फेलोशिप' (1998 से 1999)।

निष्कर्ष -

गिरिराज किशारे को बचपन से ही समस्याओं का सामना करना पडा। जमींदाराना पारिवारिक वातावरण उतना मानवीय नहीं था, जितना की बचपन में उनकी संवेदनशीलता रही है। माँ के गुजर जाने से वे बाबा और नौकरों के साथ रहे इसलिए हर घटना को गहराई से देखने लगे। उनकी शिक्षा में मामा जुगल किशोर और बहन सत्या गुप्ता ने सहयोग दिया। नौकरी में भी गिरिराज किशोर को बहुत सी तकलीफे सहनी पड़ी। उन्होंने बहुत से पदों पर काम किया है। एक बार तो उन्हें निलंबित भी किया गया था लेकिन वे बिना डगमगाये अपने स्थान पर डटे रहे।

वैवाहिक जीवन में वे सफल रहे हैं। उनकी पत्नी मीराजी ने उनको जीवन में हर क्षण सहयोग दिया है। उनका व्यक्तित्व आकर्षक ही नहीं बुद्धिमान भी है। वे अध्ययन में गहरे अध्येता है। देशी-विदेशी साहित्यों का अनुवाद करके उन्होंने साहित्य लेखन सफलता से किया।

गिरिराज किशोर गांधीवाद से प्रभावित हुए इनकी लेखन की इच्छा तीव्र है। वे ईश्वर पर भी विश्वास रखते हैं। दूसरों को मदद करने में हमेशा आगे रहते है। वे यथार्थवादी और आदर्शवादी होने के कारण उनके साहित्य में भी यथार्थवाद और आदर्शवाद है। उनके साहित्य में काल्पनिकता दिखाई नहीं देती वे समाज की समस्याओं और परिस्थितियों को यथार्थ के रूप में चित्रित करते है। उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना, बाल साहित्य आदि सभी विधाओं में साहित्यलेखन किया है। वे आधुनिक हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ साहित्यकारों में से एक हैं।

यह सच है हिंदी कथा साहित्य में गिरिराज किशोर जाने माने कथाकार हैं। इतना ही नहीं समकालीन कथाकारों में अपना विशिष्ट स्थान बनाने में वे सफल रहे हैं। लगभग 1960 से लेखन की यात्रा आरंभ करनेवाले किशोर अब तक विविध विषयों को लेकर लेखन-चिंतन कर रहे है। किसी का दल-वाद-से संबंध न रखकर अपनी अनुभूति-कल्पना भाव से लिखते रहे। उनका साहित्य मानवी जीवन से संबंध रखता है। लोकरंजन की अर्चना, लोकमंगल और

लोकशिक्षा के लक्ष्य को सामने रखकर साहित्य सृजन किया। समाज जीवन और मानवी जीवन का अंतरबाह्य रूप चित्रित किया है। और ईमानदार रचनाकार का फर्ज निभाते है।

राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विषयों को स्पर्श करते हुए समकालीन समस्याओं को भी उठाया है। मानव आस्तित्व गुण आरक्षण, दलित जीवन, पूँजीवादी संस्कृति, पारिवारिक टूटते रिश्तें, औद्योगिकता, विज्ञान का रूप, सामंतीमूल्य आदि पर चिंतन करते हुए निर्भिक शैली को अपनाकर साहित्य सृजन किया।

गिरिराज किशोर के पास जीवन की व्यापक अनुभूति है। मानवी जीवन पीड़ा, तकलिफ, कमियाँ, नारी की स्थिति दांपत्यजीवन, पुरूष प्रधान संस्कृति, मध्यम वर्गीय समाज की कुंठा, दकियानुसी स्थिति बदलते संदर्भ, महानगरीय समाज जीवन, एवं संस्कृति दफ्तरशाही आदि का भी चित्रण करते है।

गिरिराज किशोर जी वर्तमान युग के प्रतिभा संपन्न, प्रतिष्ठित एवं कुशल लेखक हैं। वे बहुत ही सीधे-साधे सरल, संवेदनशील, संघर्षशील, दृढ निश्चयवाले एवं स्वाभिमानी है। किशोर जी मानवतावादी लेखक है। समाज की भलाई और प्रगति के लिए साहित्य लेखन करते हैं।

भाव, भाषा, शैली, विषय चेतना की दृष्टि से उनका साहित्य महत्त्वपूर्ण है। हिंदी कथा साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान देनेवाले गिरिराज किशोर महत्त्वपूर्ण साहित्यिक है। उनका साहित्य विचारों को भावों के स्तर पर चित्रित करने का प्रामाणिक प्रयास है - इसमें वे सफल रहे है।

****